पद ७२

(राग: मांड - ताल: केहरवा)

स्वरूपीं हें मन सुख सेवो। सहज सुख सेवो। स्वरूप सुख सेवो। किं आत्मसुख सेवो। विषय त्यजुनी एकांत स्वरूपसुख सेवो॥धु.॥ विमल विपुल घन निजानंद हा नित्यप्राप्त स्वानंद।

स्वरूप सुख सेवो।।१॥ चिन्मार्तांडोदयानंद हा हाचि त्रिभुवनानंद। स्वरूपसुख सेवो।।२॥